REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

आधुनिक हिन्दी उपन्यास 'पथर कटवा' में मजदूरों की समस्या

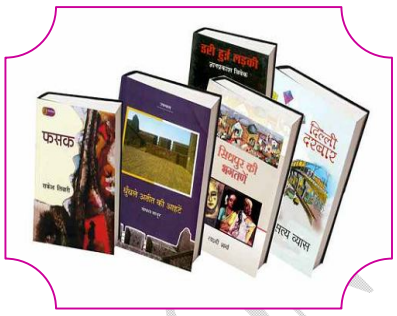

डॉ.एल.पी.लमाणी
हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक)

प्रस्तावना :

स्वतंत्र बहरत की लोकशाही में इस मजदूरों की यह समस्या आज तक हल नहीं की । वर्षों से चली आ रही उनकी ये समस्याएँ आज की तारीख में भी वैसी ही बनी हुई है । उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । देखा जाए तो आज उनका कुछ नुकसान ही हो रहा है । वडार समाज के व्यवसाय में नए तंत्रज्ञान के प्रवेश के कारण, नई तकनीकी और यंत्रों के कारण उनसे उनका पुश्तैनी काम छीन गया है । उनका रोजी–रोटी कमाना कठिन हो गया है । समाज–कार्य और राज–कार्य में उनकी भागादारी नहीं हो पाई । महाराष्ट्र और कर्नाटक में यह मजदूर बहुत ही पिछड़ा हुआ है । दूसरी और कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में इस समाज की भागीदारी राष्ट्र–निर्माण में कहीं अधिक है वहाँ उनकी आवाज सुनाई देती है । वडार मजदूर का जीवन अंधकारमय है । इस मजदूर के बारे में शेष समाज बहुत ही कम जानता है । उसकी जीअन संस्कृति आदि के बारे में सारा बहरतीय समाज अनजान है । इन सभी बातों का विवेचन–विश्लेषण लेखक ने उपन्यास में किया है । 'पथर कटवा' सन् २००६ में प्रकाशित लक्ष्मण गायवाड द्वारा लिखित और प्रभा प्रभा रोटे द्वारा अनुवादित उपन्यास है । इस उपन्यास में अत्यंत कष्टप्रद जीवनयापन करने वाले वडार मजदूर और उस समाज की अनेक उपजातियों के बारे में, उनके दु:ख–दर्द और समस्याओं के बारे में लिखा गया है । महाराष्ट्र व कर्नाटक में वडार की अनेक उअपजातियाँ है – जैसे पाथरूवट, माटी, वडार, गाठीवडा, गिरणी वडार इत्यादि । मेहनत से अपना जीवनयापन करते हैं । अपनी मेहनत से धरती को खोदकर बढ़िया किस्म का पत्थर निकालते हैं । अनेक पीढ़ियाँ से उन्होंने बहुत उम्दा पत्थर निकाल कर बड़े–बड़े घर–बार किले मंदिर इत्यादि बनाने का काम किया है । समझ लीजिए कि भारत माता के मंदिर की बड़ी पक्की नींव वडार मजदूर ने ही रखी है । इस वडार समाज के लोगों को अर्से से रहने की जगह, शिक्षा पाने और एक इंसान की तरह जीने का मौका आज तक नहीं मिला है ।

अभाव :–

तुकाराम के पिता शंकर को पत्थर तोड़ते वक्त पत्थर का टुकड़ा आँख में लग जाने के कारण अपनी आँख गँवानी पड़ती है । वडार मजदूर के लोगों को दिन–रात पत्थर तोड़ने का काम करना पड़ता है । पर्वतों, चट्टानों को काट–काटकर ये विविध वस्तुएँ निर्मान कर पानि कला का प्रदर्शन करते हैम । इतना काम करने के बावजूद इन्हें अपने लिए कोई सहायता नहीं मिलती । "शंकर की निकली आँख को उसने एक हाथ से पकड़ा और दूसरे हाथ से चाकू जैसी तेजधार वाले पत्थर के टुकड़े से काट कर अलग कर डाला ।" [१] यहाँ शंकर के इलाज केलिए भी उसके पास पैसा नहीं होता और घरेलू इलाज से काम चलाया जाता है । ऐसा ही हादसा शंकर के भाई भीमा के साथ भी होता है, जो कुआँ खुदवाते वक्त पत्थरों के ढेर के नीछे दब जाता है और काफी जखमी हो जाता है । यहाँ दलितों के जीअन के ये वह प्रसंग हैं, जो उनके जीवन का अंग बन चुके हैं । हालात से उन्होंने समझौता कर लिया है । गरीबी के कारण उन्हें अनेक यातनाओं से गुजरना पड़ता है । ना ढंग का खाना, न ढंग का ओढ़ता । एक ही कपड़ा धो–धोकर पहनने वाले वडार जैसे–तैसे अपना तन ढक पाते हैं । शंकर सीता से जब नयी साड़ी खरीडने को कहता है जिसके पास एक भी ढंग की साड़ी नहीं होती । परंतु सीता कहती है – "अपने बेटे की तरफ देखो, पाँच सल का हो गया है – अब तक उसने कभी कपड़ा नहीं पहना । क्यों न उसका बदन ढकने केलिए कुरता खरीडा जाए ।" [२] इतनी दरिद्रता इनके जीवन में होती है । बच्चे के तन को ढकने तक का कपड़ा इअन्के नसीब में नहीं होता ।

नकारवाद –

दिन–रात मेहनत मजदूरी करने के बावजूद इस वडार मजदूर की गरीबी दूर नहीं हो पाती क्योंकि ये एक जगह से दूसरी जगह, एक गाँव से दूसरे गाँव भटकने वाले लोग कहीं एक गाँव में स्थायी नहीं हो पाते । काम के लिए इन्हें भटकना पड़ता है । इसका असर ना ये पढ़ते–लिखते हैं, ना ये अपना घर बना सकते हैं । शंकर वडार जब बड़ी लगन से पाटील के बाड़े का, घर का काम करता है, दिन–रात एक करके कुछ पैसे इकट्ठा होने की उसे उम्मीद होती है, परंतु वह पढा–लिखा न होने के कारण अपना ही हिसाब नहीं कर पाता और पाटील उसे उसकी मजदूरी के भी पूरे पैसे नहीं देता । बार–बार होने वाले इस अन्याय को दूर करने के लिए शंकर तुक्या को पढ़ना–लिखाना चाहता है, जौसकी हिसाब में मदद करे और उसे पूरी मजदूरी मिल सके । तुक्या पढाई में तो होशियार होता ही है और खेल में भी नाम कमाने लगता है । स्कूल जाकर तुक्या होशियार बन जाता है । अपने पिता का हिसाब संभालने लगता है । शंकर कहता है – "मेरे तुक्या के स्कूल जाने से हमारी मेहनत के पूरे पैसे

मिले ।" [३] यहाँ मजदूरो जगी सजगता दिकहई देती है । अपने स्वाभिमान को साबित करने के लिए यह परिवर्तन शंकर की ओर से होता है जो अपने अन्याय को दूर करने के लिए अपने बेटे से कहता है – " तुम्हारी इच्छा हो तो तुम अवश्य पढो, अपने वडार मजदूरों का नाम रोशन करो, मास्टर बनो, पुलिस बनो, अपने मजदूरों का नाम हो जाएगा ।" तुक्या के स्कूल के मित्र उसकी होशियारी पर खुश होते हैं ।

वडार लोग मंदिर के ऊपर का शिखर, कलश बनाते हैं साथ भगवान की मूर्तियाँ तक बनाते हैं, जिनमें राम, लक्ष्मण, सीता की मूर्तियाँ होती है । उनके कला की सब चर्चा करते हैं । पर मंदिर में प्रणाम करने जाना होता तो उनपर रोक लगाई जाती है । यह सब देखकर तुक्या अपने अधिकारों के लिए लड़ता दिखाई देता है । वह कहता है – "इस मंदिर का पुनर्निर्माण हम वडार लोगों ने ही किया है तो फिर हम लोगों पर रोक क्यों लगा रहे हैं ? मंदिर बनाते समय, मूर्तियाँ बनाते समय तो वे अपवित्र नहीं हुई । मेरे पिता और भाई ने ही इस मंदिर और मूर्तियाँ का निर्माण किया, खून पसीना एक करके यह मंदिर बनाया । फिर हमें ही इसमें प्रवेश क्यों नहीं ?" इस प्रकार अपनी मेहनत को सम्मानित करने के लिए तुक्या आक्रोश कर्ता दिखाई देता है ।

गलत परंपरा का विरोध –

यहाँ अपनी परंपराओं और रीतियों से भरा वडार मजदूर जब बदलने को तैयार नहीं होता तब तुकाराम अकेला ही विद्रोह करना चाहता है । वडार मजदूर की स्त्रियाँ चोली नहीं पहनती । बचपन से ही अपने जातियों के स्त्रियों को यहँ तक कि अपनी माँ को भी बिना चोली देखने वाला तुकाराम इस प्रथा को तोड़ना चाहता है । वह पत्नीको चोली पहनाना चाहता है । वह सोचता है कि – : सीता माई ने यह रिवाज हमें दिया है कि जब तक किसी युग में कोई राम सुनहरा हिरन मार कर उसकी चमड़ी की चोली सीता को न पहनाए तब तक कोई अपनीवडार औरत चोली न पहने ।" [४] परंतु परंतु तुकाराम अपनी जाति के इस परंपरा के खिलाफ जाकर ठान लेता है कि, वह उसी लड़की से शादी करेगा जो ब्याह में चोली पहनेगी । और वह ऐसी ही लड़की से शादी भी करता है। उसे चोली पहनाता है जिस कारण दो गुटों में दंगा हो जाता है । चार लोगों की मौत कई जख्मी हो जाते हैं । दोनों गुटों के लोगों के सिर्फ चोली पहनने, न पहनने के प्रश्न पर प्राण चले गए ।

वडार मजदूर में फौलाद की ताकत है, हाथी का बल है, बाअघ जैसा कडा दिल है । बड़े–बड़े पर्वत तोडकर उसके छोटे–छोटे टुकडे करके वे रास्ता बनाते हैं । पत्थर को घड़कर सुन्दर–सुन्दर घर, बाड़े और महल बनाते हैं । गाँव के मंडिर और मूर्तियाँ गड़ते हैं । समझो की एक तरह से भगवान को ही जन्म देते हैं । वडार मजदूर का इतना महान इतिहास होने के बावजूद आज इन मजदूर को काम नहीं मिलता क्योंकि अब ये सारे काम

4

बड़े–बड़े बिल्डर्स अक्रते हैं और मशीनों और यंत्रों से सारा काम होता अहि। इस वजह से तमान वडार लोग बेकार बैठे है । एक बुल्डोजर हजारों लोगों के पेट पर लात मारता है ।

आज २१वीं सदी में कुछ लोग पढ़–लिख गये हैं । परंतु अभी भी ऐसा मजदूर बाकी है, जो अपने इस परंपरागत पेशे में अटका है। जिन्हें अपनी कलाओं के अलावा दूसरा कुछ काम नहीं आता । परंतु इस आधुनिक यंत्रों ने इन्हें भूखे मरने पर मजबूर कर दिया है । लेखक को ये हालात देखकर चिंता हो रही है कि आनेवाला युग में उसके समाज की ही तो मृत्यु नहीं हो जाएगी । और इसलिए इस दलित समाज में चेतना की आवश्यकता है । इनमें अपने प्रति, अपने अधिकारों के प्रति इतना ही नहीं तो अपने प्रति, अपने समाज के प्रति संगठित एवं संघर्षित होना जरूरी है । तभी यह दलित समाज अपनी तरक्की कर अपने रक्षण कर पायेगी ।

1. 'पथरकटवा'–लक्ष्मणगायवाड

LBP PUBLICATION